ओमशान्ति मीडिया

मूल्यनिष्ठ समाज की रचना के लिए समर्पित

वर्ष - 15 अंक-4 मई-II, 2014 पाक्षिक माउण्ट आबू ₹ 7.50

गीता में ज्ञान, योग एवं कर्म का सुंदर समन्वय

'गीता के भगवान द्वारा स्वर्णिम विश्व की स्थापना' विषय पर विचार विमर्श

ओ.आर.सी. गुड़गांव। सम्मेलन का दीप प्रज्वलन कर उद्घाटन करते हुए महामण्डलेश्वर डॉ. शासवतानन्दजी, ब्र.कु.बृजमोहन, वी.ईश्वरैया, महामण्डलेश्वर स्वामी हरिओम, प्रो. नीलकण्ठ पति, डॉ. मुकुन्द दास, ब्र.कु. उषा,माउण्ट आबू, ब्र.कु. गीता, ब्र.कु.बसावराज तथा अन्य।

ओ.आर.सी. गुड़गांव। श्रीमद्भगवद्गीता एक सम्पूर्ण जीवन दर्शन है, ज्ञान, योग एवं कर्म का बहुत सुंदर समन्वय ही गीता की विलक्षणता है।

उक्त उद्गार ब्रह्माकुमारीज़ द्वारा 'गीता के भगवान द्वारा स्वर्णिम विश्व की स्थापना' विषय पर आयोजित अखिल भारतीय सम्मेलन में महामण्डलेश्वर डॉ. शासवतानन्दजी, कुरुक्षेत्र ने व्यक्त किये। उन्होंने कहा कि ब्रह्माकुमारी ईश्वरीय विश्व विद्यालय एक सकारात्मक सोच के साथ कार्य कर रहा है, जोकि गीता के सही रहस्य सारे विश्व के सामने प्रतिपादित कर रहा है। उन्होंने कहा कि हरेक चीज़ के मूल में कहीं न कहीं सत्य है, सत्य की प्रतिष्ठा किसी भी रूप में हो, चाहे हम उसे किसी भी कोण से देखें तो भी वो सत्य ही दिखाई देगा। बस हमें अपने हृदय को शुद्ध रखने की ज़रूरत है। डॉ. एस.एम.मिश्रा,फाउन्डर,मातृभूमि सेवा मिशन,कुरुक्षेत्र ने कहा कि वास्तव में गीता में भगवान ने किसी ऐसे युद्ध की शिक्षा नहीं दी है, जो हिंसक हो, उसमें तो आत्मा के जो मूल शत्रु काम, क्रोध, लोभ, मोह और अहंकार हैं, उनको मारने की बात कही गई है। ब्र.कु.बृजमोहन, मुख्य सचिव, ब्रह्माकुमारीज़ ने अपने वक्तव्य में कहा कि इस गीता सम्मेलन का मुख्य उद्देश्य यही है कि जन-जन तक यह संदेश पहुंच जाए कि भगवान पुनः किस प्रकार से स्वर्णिम विश्व की स्थापना का कार्य कर फिर से आसुरी सम्पदा को बदल दैवी सम्पदा बना रहे हैं? उन्होंने कहा कि भारत जो सोने की चिड़िया कहलाता था, आज उसकी क्या हालत हो गई है, आज लोग धर्मगुरुओं की बात नहीं मानते, जब ऐसा समय आता है तो उसको ही धर्मग्लानि कहा जाता है। उन्होंने आगे कहा कि भगवान ने गीता का ज्ञान कोइ भौतिक हिंसा के लिए नहीं दिया बल्कि मानव के असली दुश्मन तो काम, क्रोध, लोभ, मोह और अहंकार हैं, इन पर जीत पाने के लिए ज्ञान दिया, आध्यात्मिक भाव से ज्ञान को तलवार, ज्ञान को तीर भी कहा जाता है। जिसको न समझने के कारण लोगों ने उसे हिंसक युद्ध समझ लिया है। वी.ईश्वरैया,पूर्व चीफ जस्टिस,आन्ध्र प्रदेश ने कहा कि ये बड़े हर्ष की बात है कि ब्रह्माकुमारीज़ के सभी सदस्य गीता के भगवान की शिक्षाओं को अपने जीवन में उतार रहे हैं, ये सारे विश्व के लिए एक बहुत सुन्दर उदाहरण है। महामण्डलेश्वर स्वामी हरिओम, श्रीकृष्णा आश्रम,दिल्ली ने कहा कि हमें आज आवश्यकता है गीता के गूढ़ रहस्य को समझ उसे अपने जीवन में लाने की। प्रो. सुखदेव शर्मा,वाइस चान्सलर,हारिद्वार ने कहा कि आज हमारी संस्कृति लेने की बन गई है, अगर हमें दैवी-संस्कृति लानी है, तो देना सीखना होगा, आज प्रकृति के दोहन के कारण ही दिन प्रति दिन प्राकृतिक आपदायें भी बढ़ती जा रही हैं। प्रो. नीलकण्ठ पति,पूर्व वाइस चान्सलर,पुरी ने कहा कि गीता तो हमारे जीवन का वास्तविक परिचय-पत्र है, जो हमें स्वयं की पहचान देता है। डॉ. मुकुन्द दास,महन्त गोपेश्वर,जबलपुर ने कहा कि आज हम शास्त्रों में वर्णित कथाओं को मात्र मनोरंजन या समय गुज़ारने के माध्यम से ही लेते हैं, उनका गहरा मंथन नहीं करते।

गीता में भगवान ने किसी ऐसे युद्ध की शिक्षा नहीं दी है, जो हिंसक हो, उसमें आत्मा के जो मूल शत्रु काम, क्रोध, लोभ, मोह और अहंकार हैं, उनको मारने की बात कही गई है।

ब्र.कु. उषा,माउण्ट आबू ने भी अपने वक्तव्य में भगवान के द्वारा गीता में वर्णित गुह्य रहस्यों को उजागर किया।

ब्र.कु. गीता,निदेशिका,ओआरसी ने अपने अध्यक्षीय भाषण में कहा कि भगवान ने कहा है कि मैं अजन्मा हूँ, मैं मनुष्य के गर्भ से जन्म नहीं लेता, मैं तो प्रकृति को वश करके आता हूँ, जबकि श्रीकृष्ण का तो लौकिक मनुष्यों सदृश्य जन्म होता है। इसके अनुरूप ही परमात्मा शिव इस कलियुग के अंत में ब्रह्मा के तन में अवतरित होकर इस कलियुगी दुनिया को सतयुग बनाते हैं।

कार्यक्रम का संचालन ओआरसी की निदेशिका ब्र.कु. आशा ने किया। कार्यक्रम के प्रारंभ में वीडियो कॉन्फ्रेन्सिंग के माध्यम से माउण्ट आबू राजस्थान से दादी जानकी,मुख्य प्रशासिका,ब्रह्माकुमारीज़ एवं दादी गुल्ज़ार,संयुक्त मुख्य प्रशासिका ने सम्मेलन के प्रति शुभकामनाएं दीं। पूरे भारत से लगभग 600 से भी अधिक विद्वान, सन्त-महात्माओं एवं अनेक प्रबुद्ध जनों ने कार्यक्रम में शिरकत की।

के.जी. सुरेश, सीनियर जर्नलिस्ट,जी न्यूज़ ने कहा कि सब धर्मों के लोग परमात्मा को एक ही मानते हैं, बाकी जितने भी धर्म स्थापक हुए हैं वे तो परमात्मा के सन्देश-वाहक ही कहलाते हैं। उन्होंने कहा कि अगर सारे धर्मों के लोग उस एक परमात्मा को पहचान लें, तो धर्म के नाम पर चल रहे सारे विरोध अपने आप ही शान्त हो जायेंगे। एन.के. सिंह,सीनियर टी.वी. जर्नलिस्ट ने कहा कि जब भी मैं ब्रह्माकुमारीज़ के कार्यक्रम में जाता हूँ तो मुझे हर बार कुछ न कुछ सीखने को मिलता है।

ब्र.कु. मनोरमा,राजयोग प्रशिक्षिका, इलाहाबाद ने कहा कि वास्तव में परमात्मा कलियुग के समय में ही आकर सतयुग की पुनः स्थापना का कार्य करते हैं। उन्होंने कहा कि पाण्डव, कौरव और यादव तो कर्तव्य-वाचक नाम हैं। पाण्डव अर्थात् प्रीत बुद्धि जो परमात्मा को पहचान कर उनसे जुड़ते हैं जबकि कौरव बुराइयों का प्रतीक है, जो परमात्मा को पहचान नहीं पाते और गलत कार्यों में ही लगे रहते हैं। डॉ. पुष्पा पाण्डे ने अपने वक्तव्य में कहा कि वास्तव में गीता एक आध्यात्मिक ग्रन्थ होने के कारण किसी एक धर्म का शास्त्र नहीं है, ये तो सब धर्म वालों के लिए समान है। गीता ही ऐसा ग्रन्थ है जिसमें भगवानुवाच लिखा है। कार्यक्रम में अनेक पैनल डिस्कशन के माध्यम से विभिन्न विषयों पर चर्चा हुई, जिसमें कई विश्वविद्यालयों के वाइस चान्सलर, संस्कृत के प्रोफेसर एवं संत-महात्माओं ने भाग लिया।